विश्व वेद सम्मेलनम्

WORLD VEDA CONFERENCE

"आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः"

At

Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar,U.K.(India)

On

(20-21-22 Nov, 2009)

Subject of Research Paper :- ज्योतिष **(ASTROLOGY)**

Topic of Research Paper :- वेदांग ज्योतिष में सामूहिक अनिष्ट की विवेचना व समाधान

Submited by-
Mr. Jitendra Vyas
Jyotish Martand, BCA,
MBA (HR/Mrkg), MA(Astrology)
PhD(Research scholar of
Astrology) JNV University
Jodhpur, Rajasthan

Conference Coordinator
Prof. Mahavir ji

www.drjitendraastro.com

वेदांग ज्योतिष में सामूहिक अनिष्ट की विवेचना व समाधान

वेद व वैदिक संहिताएं भारतीय मनीषियों के ही नहीं अपितु विश्व भर के सर्वमान्य व प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। विश्वदर्शन, चिन्तन, मनन एवं ज्ञान की किसी भी प्रक्रिया की मूल इन्हीं से सम्बद्ध है। यदि वेदों के प्राचीनता की बात की जाये तो लोकमान्य तिलक ने ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 वर्ष बताया[1] परन्तु पं.रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक ''वैदिक सम्पति'' में अकाट्य प्रमाणों व तर्को के साथ ऋग्वेद का काल ईसा में कम से कम 22,000 वर्ष पूर्व बताया[2] विश्व की सभी समस्याओं का समाधान वेदों व उसके अंगों अर्थात् वेदांगों में अर्न्तनिहित है। वेदांग[3] छः बताये गये हैं शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छण्द व ज्योतिष। नारदीयम् के अनुसार वेदांग ज्योतिष को वेद भगवान का निर्मल व पवित्र नेत्र कहा गया है। यथा -

वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योति शास्त्रकल्मषम्।।[4]

वेदांग ज्योतिष का अर्थ :- ''ज्योतिष'' जैसे प्रसिद्ध व अति प्राचीन व्यवहार्य शब्द को व उसके व्यावहारिक और रूढ़ अर्थ को महर्षि पाणिनी ने अपने मुख्य ग्रन्थ अष्टाध्यायी में समझाया है, उन्होनें बताया कि ''धातुनां सर्वमूलत्वात्''[5] सभी पदों का मूल धातु है। ''ज्योतिष'' शब्द में ''द्युत'' मौलिक धातु है। 'द्युत दीप्तौ'' धोतने अर्थ में द्युत् धातु भ्वादिगणीय, आत्मनेपदी व सेट् है जिसका अर्थ - चमकना, दैदीप्यमान करना, स्पष्ट करना, व्याख्या करना, अभिव्यक्त करना, सूभूषित करना।[6] द्युत धातु से 'ज्योतिष' शब्द का निष्पादन करने के लिए उणादि इसित् (इस) प्रत्यय का विधान हुआ।

द्युत + इस् (इसिन्)

ज्युत् + इस् - ज्योत + इस् - ज्योतिस्

षकार से ज्योतिष[7]

मेदिनी कोष के अनुसार ''ज्योतिष'' सकारान्त नंपुसक लिंग में ''नक्षत्र'' अर्थ में तथा पुर्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[8] यथा -

ज्योतिषरग्नौ दिवाकरे पुमान्नपुंसक - दृष्टौ स्थान्नक्षत्र प्रकाशयोः ।।

शब्दकल्पद्रुम[9] के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया शास्त्र विशेष है। हलायुध कोष[10] में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, मौहूर्तिक, सावंत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।

उपादेयता :- मानव धर्म के प्रथम शास्त्रकार मनु का कथन है कि भूत भविष्य और वर्तमान सम्बंधी सभी साहित्य वेदों में प्रसिद्ध है। **''भूत, भत्य भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिद्धतयति।।[11]** छः वेदांगो में ज्योतिष शास्त्र सर्वोपरि है जिससे भूत, वर्तमान व भविष्य की धटनाओं का अनुमान लगाया जा सकता है तथा शास्त्र में यह भी कहा गया है कि -

शिक्षा मयूराणां नागानां मणयो यथा ।

तद्वद्वेदांग शास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि संस्थितम्।।[12]

छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाम में मणि के समान महत्व को धारण किये हुए मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है इसी ज्योतिष शास्त्र द्वारा आधुनिक समय में होने वाली अनिष्टकारी धटनाओं की विस्तृत विवेचना की जा सकती है क्योंकि वेद में कहा गया है कि -

ग्रहाधीनं जगत्सर्व, ग्रहाधीनं नरावराः ।

कालज्ञानं ग्रहाधीनं, ग्रहाकर्मफल प्रदाः।।[13]

www.drjitendraastro.com

अर्थात् सम्पूर्ण चराचर जगत् ग्रहों के अधीन है, नर-नारी पशु-पक्षी भी ग्रहों के अधीन है, काल का ज्ञान भी ग्रहों के अधीन है और ग्रहों के द्वारा ही किये गये कर्मो का फल प्राप्त होता है अतः ज्योतिष की भूमिका मानव जीवन में अपेक्षित है। स्वयं सायणाचार्य ने ''ऋग्वेद भाष्य भूमिका'' में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ में उचित काल का संशोधन है।[14] उदाहरणार्थ - **''कृत्तिका स्वग्निमाधीत''**[15] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान करें।

यहाँ कृत्रिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष सम्बंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं है। हिन्दु षोडष संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल मूर्हूत में ही किये जाते हैं। श्रुति कथन है -

ते असुरा अयज्ञा दक्षिणा अनक्षत्राः ।

यच्य किंच कुर्वत तां कृत्यामेवाडकुर्वत ।।[16]

अर्थात् ये यज्ञ जो करणीय हैं, वो कालानुसार (निश्चित मुर्हूत पर) न करने से देवरहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्ररहित हो जाते हैं, वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते, इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि धार्मिक कृत्य करना हो, उसे वेदांग ज्योतिषानुसार निर्दिष्ट काल से ही करना चाहिए। अतः यह भी कहा गया है कि - **यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्।** [17]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम् ।

उषरे वापितं बीजं तद्वद्भवति निष्फलम् ।।[18]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है, काल ज्ञान के बिना समस्त श्रौत स्मार्त कर्म, गर्भाधान, ज्ञानकर्म, यज्ञोपवित, विवाह इत्यादि संस्कार उषर जमीन मे बोये गये बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं, अतः सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता व सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है। संसार मे जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसका साक्ष्य सूर्य और चन्द्रमा घूम-घूम के दे रहे हैं। सूर्य-चन्द्र ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय-सूर्यास्त, चन्द्रोदय-चन्द्रास्त, ग्रहों की श्रृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। यथा -

अप्रत्क्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम् ।

प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चन्द्रार्को यत्र साक्षिणौ ।।[19]

वेदों में ग्रह :- वेदों में ग्रहों का स्वरूप स्पष्ट रूप से मिलता है तथा पृथ्वी पर होने वाले अनिष्ट का फल इन्हीं ग्रहों की गति द्वारा ही ज्ञात किया जा सकता है। अथर्ववेद संहिता में भी ग्रह शब्द का स्पष्ट प्रयोग हुआ है,गया है -

उत्पाताः पार्थिवांतरिक्षाः शं नो दिविचरा ग्रहाः।। [20]

अर्थात् पृथ्वी और अन्तरिक्ष में होने वाले उत्पात व अनिष्ट के लिए उत्तरदायी धुलोक के ग्रह हमारे लिए कल्याणकारी हो, सर्वारिष्ट से बचने के लिए प्रार्थना की गई है। यजुर्वेद में वेदांग ज्योतिष का ज्ञान रचने वाले को **''नक्षत्र दर्श''** कहा गया है। यथा- **''प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्श** [21] ऋग्वेद [22] में प्रथम बार द्वादश राशि का विचार किया गया है। यथा -

द्वादश प्रद्यश्चक्रमक त्रीणी नभ्यानि कं उ तच्चिकेत।।

(1) **सूर्य :-** ऋग्वेद में एक जगह आश्चर्य के साथ पूछा गया है कि सूर्य विश्व अपने स्थान पर दृढ़ कैसे है, वह गिर क्योंकि नहीं जाता[23] उत्तर है कि सूर्य स्वयं विश्व के विधान का संरक्षक है, उसका चक्र नियमित अपरिवर्तनिय, सार्वभौम नियम का अनुसरण करता है। विश्व का केन्द्र स्थान है, वह जगंम और स्थावर सभी की आत्मा है। [24]

सूर्य ही ऋतुओं का नियमन करता है, जिससे पृथ्वी पर भौगोलिक, आर्थिक व सामाजिक परिवर्तन देखे जाते हैं तथा पृथ्वी की पूर्वाद्ध दिशाओं का निर्माण भी सूर्य ही करता है।[25] ऋग्वेद में आंलकारिक भाषा में यह बताया गया

www.drjitendraastro.com

है कि सूर्य के रथ मे सात घोड़े हैं।[26] वस्तुतः सूर्य के घोड़े इत्यादि कुछ भी नहीं, वे सूर्य की सात किरणे हैं।[27] वैदिक काल में सूर्य संक्रातियों का स्पष्ट उल्लेख इस प्रकार मिलता है- सत्यभूत अर्थात् आदित्य का बारह आरों वाला चक्र द्युलोक के चारों ओर सतत् भ्रमण करते हुए भी नष्ट नहीं होता है[28] इन बारह परिधियों (12सूर्य सक्रान्ति) एक चक्र (वर्ष) और तीन नाभि (तीन ऋतु गर्मी, सर्दी और वर्षा) इन्हें कौन जानता हैं? उन चक्र (वर्ष) में शंकु की तरह 360^0 चंचल आरे (दिन) लगाए हुए है।[29] वर्तमान में वैज्ञानिकों ने यह प्रतिपादित किया है कि सूर्य अपने प्रकाश से चन्द्रमा को तेजस्वी करता है परन्तु तैतरीय संहिता में यह बात वैदिक काल से ही प्रतिपादित है। यथा -

यमादिव्या अ (घुं) शुभाप्यायन्ति ।। [30]

चन्द्रमा :- चन्द्रमा ग्रह के अर्थ में ऋग्वेद काल में **''चन्द्रमस्''** शब्द अनेक जगह प्रयुक्त हुआ है।[31] किन्तु ''चन्द्र'' शब्द का प्रयोग पहली बार अथर्ववेद में आया।[32] यथा -

चन्द्रयत्ते तपस्तन तं प्रति तपयोरूमान्द्रष्टि यं वयं द्विष्म ।।

चन्द्रमा का वैदिक नाम **''पंचदश''** भी है, क्योंकि चन्द्रमा पन्द्रह दिन में क्षीण होता है और पन्द्रह दिन में पूरा होता है। यथा -

चन्द्रमा वै पंचदशः एषदि पंचदश्याम पक्षीयते पंचदश्यामापूर्यते।। [33]

अमावस्या के दिन चन्द्रामा का न दिखाई देना तथा शुक्ल प्रतिपदा को पुनः दिखलाई देने का उल्लेख वेदों में मिलता है।[34] इस चन्द्रमा को सूर्य रश्मि अर्थात् सूर्य द्वारा प्रकाश प्राप्त करने वाला कहा गया है।[35] यह चन्द्रमा नक्षत्रों के बीच रहता है।[36] यजुर्वेद में चन्द्रमा को मानसिक शक्ति का प्रेरक ग्रह माना गया है यथा -

अश्रो नक्षत्राणमेषामुपक्ष्ये सोम आदितः।।[37]

वेदों में बृहस्पति व शुक्र :- वैदिक साहित्य में बृहस्पति का नाम अनेक मन्त्रों में आया है।[38] तैत्तिरीय ब्राह्मण में बृहस्पति के जन्म का उल्लेख मिलता है। यथा -

बृहस्पतिः प्रथमं जायमान। तिष्यं नक्षत्रमभिसंब भूव।।[39]

अर्थात् जब बृहस्पति पहले प्रकट हुआ वह विषय अर्थात् पुष्य नक्षत्र के पास था जो कि ज्योतिष की दृष्टि से संभव है अपनी गति के कारण जब दो चार घण्टे में बृहस्पति पुष्य से पृथक् हुआ तो इसे बृहस्पति का जन्म समझा गया वस्तुतः उस समय बृहस्पति पुष्य के निकट रहा था। ऋग्वेद में बृहस्पति के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि -''बृहस्पति प्रथम महान् प्रकाश के अत्यन्त उच्च स्वर्ग कक्ष में उत्पन्न हुआ ।। यथा -

बृहस्पतिः प्रथम ठजायमानो महो ज्योतिष परमे व्योमन्।। [40]

वैदिक मन्त्रों में अनेकों जगह शुक्र का उल्लेख मिलता है।[41]

गवाशिरं मन्थिनामिन्द्र शुक्रं।।

तिलक के अनुसार शुक्र शब्द से आकाशिय ग्रह अभिप्रेत है।।[42] वैदिक ग्रन्थों में शुक्र की चर्चा इस प्रकार है -

ज्योतिर्वेशुक्रं हिरण्यम्[43]

सत्यं तै शुक्रम्[44]

शुक्र के लिए **''अथं वेनश्योदयत् पृश्विगर्भा ज्योतिर्जशयु रजसो विमाने''** [45] मन्त्र बड़ा प्रसिद्ध है।

वेदों मे राहु व केतु :- अथर्ववेद में राहु का उल्लेख सूर्य के प्रसंग में आया है जिसका अर्थ अन्धकार है।[46] ऋग्वेद में राहु को असुर बताया गया है।[47] यथा-

www.drjitendraastro.com

यं वै सूर्य स्वर्भानुतमसा विध्यदासुरः।।

वेदों के अलावा पुराणों में भी राहु का अस्तित्व स्वीकार किया गया है, राहु का आकार वृत्ताकार माना गया है, इसका व्यास 12000 योजन तथा दायरा 42000 योजन है।[48] वराहमिहिर ने राहु पर राहुधाराध्याय नामक अलग से विस्तार में अध्याय लिखकर इनका गणितागत स्पष्टीकरण बृहत्संहिता में किया है।[49] वराहमिहिर ने राहु को असुर कहा है उसे तीन नामों तम, अमु, असुर कहकर पुकारा है।[50] यथा -

राहुस्तमो ऽ गुरसुरश्य शिखी च केतुः।।

नवग्रहों में इस छाया ग्रह की गणना दुष्ट ग्रहों में होती है।[51] ऋग्वेद में सूर्य और उसकी रश्मि के लिए ''केतु'' शब्द का प्रयोग हुआ है[52] यथा -

प्रकेतुना बृहता यात्यग्नि रा रोदसी वृष भो शेरवी ।

दिवश्यिदन्ताँ उपमँ उप्रनलपयुमस्थे महिषो ववर्ध ।।

बेबर के अनुसार अद्भूत ब्राह्मण में उल्का या धूमकेतु अर्थ में यह शब्द आया है।[53] तैत्तिरीय आरण्यक में बहुवचन के साथ इनका प्रयोग मिलता है।[54] वेदांग ज्योतिष में केतु का स्पष्ट वर्णन है ऐसा कहा गया है कि ''केतु आर्द्रा या आश्लेषा में से किसी नक्षत्र में स्थित हो तो, इन नक्षत्रों में जन्म लेने वाले व्यक्ति को प्राणों का संकट होता है।[55]

वेदों में धूमकेतु :- ग्रहों की तरह धूमकेतु भी अनिष्ट के लिए उत्तरदायी है, अथर्ववेद में धूमकेतु शब्द **''शं नो मृत्युर्धूमकेतुः''** मृत्यु का विशेषण है।[56] ज्योतिष ग्रन्थों के अनुसार धूमकेतु ही पुच्छल तारा है।[57] अथर्वसंहिता में उल्कापात का वर्णन विस्तार से मिलता है।[58] यथा -

नक्षत्रमुल्काभिहतं शमस्तु नः। शं नो अभिचाराः शमु सन्तु कृत्याः।।

अथर्ववेद में शकधूम को नक्षत्रों का राजा बताया गया है।[59] यथा -

तस्मै ते नक्षत्रराज शकधूम सदाः नम।।

उपरोक्त सभी तथ्य वेदों में वेदांग ज्योतिष की प्रासंगिकता सिद्ध करते है। सामूहिक अनिष्ट पृथ्वी पर घटित होता है अतः ग्रहों को पृथ्वी के सापेक्ष लेना आवश्यक है। वैदिक साहित्यों में पृथ्वी[60] का अस्तित्व है, भूमि के लिए पृथ्वी शब्द का प्रयोग हुआ है यथा -

आ याह्यग्ने पथ्या अनुस्वा मन्द्रो देवानां संख्य जुषाणः

आ सानु शुष्मैनर्दयनु पृथित्या जम्भेभिर्विश्वमुराधगवनार्नि ।

ऐतरेय ब्राह्मण में पृथ्वी को सागर से वेष्टित बताया गया है।[61] ऋग्वेद में पृथ्वी के आकार को चक्र के समान बताया गया है।[62] इस पृथ्वी व द्यौ में बीच अन्तरिक्ष है।[63]

द्यौरेन्तरिक्षे प्रठिष्तान्तरिक्षि पृथिव्याम् ।।

ऋग्वेद में कहा गया है कि- पृथ्वी आकाशस्य सूर्य की पत्नी है, वह उसके प्रति समर्पित हैं। बादलों के माध्यम से वह गर्भ धारण करती है, उस निषेचन के फलस्वरूप प्राणी वर्ग का प्रजनन करती हैं।

माता पितरमृत् आबभाज धत्येग्रे मानसा सं हि जग्मे ।

सा वीभत्सुर्गर्भरसा निविद्वा नमस्वन्त इदुसराकमीयुः।।[64]

www.drjitendraastro.com

ऐतरेय ब्राह्मण में दिन व रात्रि के रहस्य को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि पृथ्वी गोल है, आकाश से अलग है ओर आकाश में निराधार स्थित है।[65]

वैदिक साहित्यों में ग्रहण :- ऋग्वेद में सूर्य ग्रहण के बारे में अनेक संदर्भ मिलते हैं। यहाँ यह कहा गया है कि ''स्वर्भानु''(राहु) ने अन्धकार द्वारा सूर्य को ग्रस लिया, अत्रि ने फिर सूर्य को बाहर निकाला।[66] अथर्ववेद में भी सूर्य ग्रहण के अनेक प्रसंग आते हैं।[67] यह ही नहीं ऋग्वेद में भी सूर्य ग्रहण के सिद्धान्तों का प्रतिपादन भी मिलता है[68] अथर्ववेद में चन्द्र ग्रहण का भी उल्लेख मिलता है।[69]

ग्रह ग्रहण व धूमकेतु से अनिष्ट विवेचना - ग्रहों के गणितिय समीकरणों से होने वाले अनिष्ट की विवेचना की जा सकती है। पृथ्वी पर होने वाले अनिष्ट में ग्रहों की ही भूमिका रहती है। इसी सन्दर्भ में कहा गया है :-

उत्पाताः पार्थितांतरिक्षाः शं नो दिविचरा ग्रहाः।। [70]

अर्थात् पृथ्वी व अन्तरिक्ष में होने वाले उत्पातों व उनसे होने वाले अनिष्टों के लिए उत्तरदायी द्युलोक के ग्रह हमारे लिए कल्याणकारी हो। साथ ही उस काल विशेष (ग्रहण इत्यादी) में होने वाले अनिष्ट से आशंकित होकर ऋषि ने शान्ति के लिए प्रार्थना भी की है।[71] अतः वेदांग ज्योतिष के विभिन्न समीकरणों में आपसी सांमजस्य से आधुनिक समय में होने वाले अनिष्टों की पूर्व जानकारी प्राप्त की जा सकती है, यदि दृष्टान्त विचारा जाये तो 30 सितम्बर 08 को मेहरानगढ. दुर्ग जोधपुर में जो सामूहिक अनिष्ट हुआ उससे पूर्व 26/27 अक्टूबर को खण्डग्रास चन्द्रगहण था जो कि कुंभ राशि मे धाटित हुआ था।[72] अतः वेदांग ज्योतिषनुसार स्वंय सिद्ध है कि -

कुम्भोपरागे पीड्यन्ते गिरिजाः पश्चिमभाजनाः।।

तस्करद्विरदामीराः प्रजानां दुःख दायकाः ।। [73]

यदि खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण कुंभराशि में धटित होता है तो उस राष्ट्र विशेष के पश्चिम प्रदेश (राजस्थान) के पश्चिम पर्वत वाली (जोधपुर) पीड़ित होगें तथा वहाँ की प्रजा को उस नगर के धनाड्य लोगों के द्वारा पीड़ा होगी।

वराहनिहिर[74] ने भी ग्रह व ग्रहण से होने वाले अनिष्टों (भूकम्पों व सुनामी) की चर्चा बृहत्संहिता में की है। उन्होनें 4 नक्षत्रों मण्डल की[75] व्यवस्था पद्धति बता कर भूकम्प[76] कब, कैसे व किस स्थान पर आयेगा इसकी विवेचना की थी। यद्यपि बाद में आधुनिक ग्रह वैज्ञानिक (ज्योर्तिविद्) इस संकल्पना के आगे न बढ़ा पाये। इन चार मण्डलों के नाम इस प्रकार है - 1. वायव्य 2. आग्नेय 3. इन्द्र 4. वरूण मण्डल

वराहमिहिर ने भूकम्प से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण सूत्र दिये हैं-

1. ग्रहण काल में कभी भूकम्प नहीं आता, यह प्रायः सूर्य व चन्द्र ग्रहण काल के बाद आने वाली अमावस्या या पूर्णिमा के सप्ताह के भीतर आता है।
2. भूकम्प प्रायः मध्यरात्रि के समय या सूर्योदय के तत्काल बाद मध्याह्न के पूर्व आते हैं।[77]
3. भूकम्प से प्रभावित कम्पित क्षैत्र को दिग्दर्शित करने के लिए नक्षत्र मण्डल, चन्द्रमा व चन्द्रवत नक्षत्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।[78]
4. सर्वाधिक अनिष्ट करने वाले भूकम्प का नक्षत्र पृथ्वी व वायुमण्डल में होगा। वायु मण्डल 6200 योजन तक तथा वरूण मण्डल 180 योजन तक भूकम्प करता है।[79]
5. दिग्दाह जैसे अन्य उत्पाद लावा, ज्वालामुखी यह सभी प्रायः अग्निमण्डल नक्षत्र में फटते है[80] और उस समय प्रमुख ग्रह अग्नि तत्व[81] में होगें।
6. इसी प्रकार सभी जलप्रलय (सुनामी व बाढ़ इत्यादि) के दिन नक्षत्र वरूण मण्डल में होगें[82] तथा प्रमुख बड़े ग्रह जल तत्व[83] में होगें।

www.drjitendraastro.com

उपरोक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रख कर भूकम्प के बारे में सटीक भविष्यवाणी कर सकते हैं। यहाँ हम पिछले कुछ मुख्य भूकम्पों का विश्लेषण कर रहे हैं जो उनके धटित होने की दिनांक, उनसे पूर्व धटित हुए पूर्ण चन्द्र व सूर्य ग्रहण की तिथि व दिनांक, उस दिन के नक्षत्र, ग्रहणों के बाद आने वाली अमावस्या व पूर्णिमा के पृथ्वी मण्डल व वायुमण्डल के नक्षत्रों के मध्य सामजस्य बिठा कर उनकी केस स्टडी करेंगें।

1. विश्व सबसे बड़ा भूकम्प चीन के सेन्सी प्रांत में 2 फरवरी 1556 में आया था[84] यह विश्व की सबसे बड़ी मानवीय त्रासदी थी। यह भूकम्प वराहमिहिर आधारित सूत्रों के अनुसार मध्य रात्रि में अमावस्या के दो दिन बाद आया। लग्न कुण्डली देखें तो अष्टमेश लग्नस्थ था। वराहमिहिर सुत्रानुसार यह भूकम्प सूर्योदय के तत्काल बाद आया। अधिकतर भूकम्पों में धटित होने का समय सुबह ही हैं।

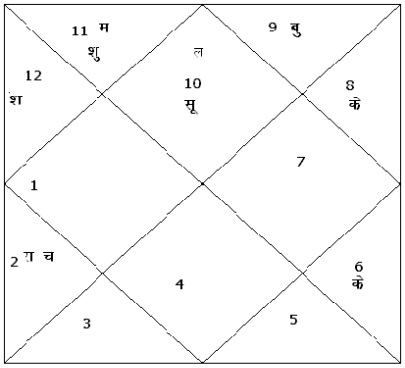

2/2/1556 7:30 सेंसी चीन भूकम्प की कुंडली

2. भारत का सबसे बड़ा भूकम्प कोलकाता में 11 अक्टूबर 1737 रात्रि में अग्नि मण्डल के भरणी नक्षत्र में आया[85]। अतः बृहत्संहिता के अनुसार यदि ग्रहण काल के पश्चात् वाली प्रथम अमावस्या व पूर्णिमा के 3 व 4 दिन पूर्व या पश्चात् अग्नि मण्डल का नक्षत्र हो तो बंगाल क्षेत्र में भूकम्प अवश्य आयेगा[86] और ऐसा हुआ भी यह भूकम्प पूर्णिमा के चार दिन पश्चात् चतुर्थी को आया।

3. विश्व का सबसे लम्बे समय का भूकम्प ईरान, तेहरान में 1.11.1755 प्रातः 7 बजे आया।[87] यह भूकम्प वायव्य मण्डल के उ.फाल्गुनी नक्षत्र में अमावस्या से दो दिन पूर्व आया, वायव्य मण्डल के भूकम्प का फैलाव हजारों मील तक होता है।[88] अतः ईरान के अलावा, पुर्तगाल, स्पेन, फ्रांस तक थर्रा गये। उस समय समुद्र की लहरें 40 फिट तक ऊपर उठी थी। इस भूकम्प की कुण्डली देखी जाये तो अष्टमेश लग्नस्थ था, मुख्य ग्रह शनि व बृहस्पति पृथ्वी तत्व की राशि में थे। अतः भूकम्प से जनमानस की सबसे बड़ी हानि हुई। यह तो वैदिक संहितानुसार ही सिद्ध है। परन्तु अनिष्ट तो पृथ्वी लोक पर होने वाली असाध्य बिमारियों के द्वारा भी होते हैं। इसी सन्दर्भ मे गर्ग ऋषि ने ''अद्भुत दर्पण'' में कहा है कि - जब गोचर में शनि ग्रह, धनु, मकर, मीन व कन्या राशियों में भ्रमण करता है तो भयंकर अकाल (भूख व प्यास) रक्त वैषम्य सम्बन्धी विचित्र रोग (एड्स, स्वाईन फ्लू इत्यादि) और श्लेष्मा रोग फुट पड़ते हैं यथा -

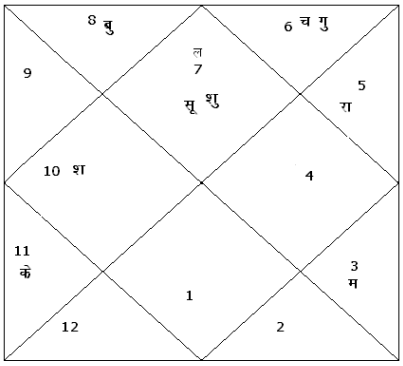

1/11/1755 7:00 तेहरान भूकम्प की कुंडली

''यावन्मार्तण्ड सूनुच्यरति धनुस्थो मनू मयं मीन कन्ये
तावद् दुर्भिक्ष भवति चरकं अत्पियासाहित धोरम्।। [89]

यदि पूर्व का उदाहरण देखें तो प्लेग नामक असाध्य रोग जब फैला था तब शनि धनु राशि में था। वर्तमान में 2009 में भी असाध्य रोग का आगमन होगा क्योंकि 09 सितम्बर 2009 से शनि ग्रह का गोचर कन्या राशि[90] में हुआ, अतः गर्ग ऋषि कृत अद्भुत दर्पण ग्रन्थानुसार विश्व भर में एक असाध्य रोग फैलेगा।

धूमकेतु (पुच्छल तारा/ कोमेट) द्वारा भी घटित हुए या होने वाले अनिष्टों की विवेचना की जा सकती है वैज्ञानिकों ने 700 तक धूमकेतुओं की खोज की है।[91] जबकि वराहमिहिर ने 1000 केतुओं का उल्लेख बृहत्सहिता में किया है।[92] ई.पू. के शताब्दियों में धूमकेतु का उल्लेखनिय इतिहास मिलता है जैसा की सेक्सपियर ने अपने नाटक जुलियस सीजर के एक प्रसंग में कहा है।

There are no comets seen when beggers die [93]

www.drjitendraastro.com

इसका अर्थ है कि भिखारियों की मृत्यु के अवसर पर धुमकेतु नहीं दिखाई देते अर्थात् मुख्य पुरूषों (राष्ट्राध्यक्ष इत्यादि) की मृत्यु के पहले धूमकेतु देखे जाते हैं। धूमकेतु एक विलक्षण प्रकार है, सहस्त्र वर्षो से नियमित कालान्तर(76वर्ष) के यह क्षितिज पर आता है। ई.पू. 86 में यह दिखाई दिया था फिर इसका उल्लेख 241 में मिलता है। धूमकेतु क्रमशः 1066, 1456, 1531, 1607, 1682, 1758, 1835, 1910 में देखा गया। अन्तिम बार 1986 को देखा गया था।[94]

धूमकेतु फल (वैदिक काल में वर्तमान तक) :- वैदिक काल से लेकर वर्तमान तक धूमकेतु के दिखने पर हुए प्रकोपों का उल्लेख मिलता है। वाल्मिकी रामायण में वाल्मिकी मुनि इसे धूमकेतु के नाम से ही पुकारा है तब से अब तक संसार में इसका प्रभाव नियमित रूप से पड़ता आ रहा है, इस सन्दर्भ में रामायण में यह उद्धरण मिलता है कि जब युद्ध काण्ड में रावण के विरूद्ध युद्ध की तैयारी करते हुए राम एक दिन धीरज खो बैठते हैं तब लक्ष्मण उन्हें धीरज बंधा कर उन्हें आश्वासन देते हुए यह कहते हैं कि -

नैर्ऋतं नैर्ऋतानां च नक्षत्रमति पीडयते ।

मूलो मूलवता स्पष्टो धूप्यते धूमकेतुना।।[95]

जब आकाश में दूर क्षितिज पर विलक्षण धूमकेतु दिखता है तो लक्ष्मण राम को कहते हैं कि राक्षसों का नक्षत्र मूल है उसका देवता नैर्ऋति है, मूल नक्षत्र अब अत्यन्त पीड़ित हो गया है, उस मूल नक्षत्र के नियामक धूमकेतु से आक्रान्त होकर राक्षसों को सन्ताप करने का भागी हो रहा है, उस समय धूमकेतु मूल नक्षत्र व धनु राशि पार कर रहा था अतः -

सर्व चैतद् विनाशय राक्षसानामुपस्थितम् ।

काले काल गृहीतानां नक्षत्र ग्रहपीड़ितम् ।।[96]

धूमकेतु का मूल नक्षत्र में आना राक्षसों में विनाश के लिए ही उपस्थित हुआ है, क्योंकि जो लोग काल (मुत्यु) से बंधे होते हैं, उन्हीं का नक्षत्र समयानुसार पीड़ित होता है।

वराहमिहिर ने भी धूमकेतु का रथ भाव, नाम, फल आदि बृ.स. में बताये है। वराहमिहिराचार्य के वचनों के अनुसार इस धूमकेतु ''रोद्रकेतु'' मण्डल का वर्गीकरण किया तथा फल भी बताया है।

प्राग्वैश्रवानरमार्गे शूलाग्रः स्थावरूक्षता भूचिः ।

नभ सस्ति भाग गामी रौद्रइति कपाल केतु तुल्य फलः।।[97]

अर्थात् रौद्रकेतु नामक धूमकेतु कपालकेतु के सदृश फल देता है, यह पूर्व दिशा में उदित होता है, इसका मार्ग पू.षाढा, उ.षाढा व मूल नक्षत्र है। इसका अग्रभाग त्रिशूल होता है, इसकी ज्वाला धूएं रंग की है। यह नभ में एक तिहाई भाग पर आक्रमण कर लेता है इस रौद्रकेतु का फल इस प्रकार है।

शुन्मरकावृष्टि रोगकरः।।[98]

अर्थात् धूमकेतु अकाल, भंयकर रोग, अनावृष्टि आदि उत्पन्न करेगा। ऋषि पाराशर ने इस धूमकेतु का फल इस तरह बताया है -

''शस्त्रं भय रोग दुर्भिक्षानां वृष्टि मरकैर्या वन्मासान पृश्यते तावद

वर्षापि त्रिभाग शेषां कृत्वार्थ च शारदधान्य माठकमस्तम् व्रजति।।[99]

अर्थात् इसके कारण विविध आयुधों से (आधुनिक अणु तक रासायनिक अस्त्र इत्यादि) सारे संसार की जनसंख्या का आधार या एक तिहाई मार्ग का नाश हो जाता है, जितने मास यह आकाश में देखा जायेगा उतने ही वर्ष इसका

www.drjitendraastro.com

प्रभाव संसार में होगा।[100] यही धूमकेतु महाभारत काल में भी आया। धूमकेतु से सम्बन्धित भविष्यवाणी करते हुए महर्षि वेदव्यास कहते हैं कि धूमकेतु के आगमन से व्यापक स्तर पर युद्ध फुट पड़ेगा ।

श्वेतो ग्रहस्तथा चित्रां समतिक्रम्य तिष्यति ।

अभावं हि विशेषेण कुरूपता वर्त पश्यति ।। [101]

धूमकेतुमहा धोरं पुष्यं चाक्रम्य तिष्टति ।

सेवयो रक्षितं धोरं करिष्यति महा ग्रहः ।[102]

अर्थात् केतु ग्रह चित्रा का अतिक्रमण करके स्वाति पर स्थित हो रहा है, इसमें विशेषकर कुरूवंश का ही नाश होगा। अब अत्यन्त भंयकर धूमकेतु पुष्य नक्षत्र पर आक्रमण करके वही स्थित होता है, यह महान उपग्रह दोनों सेनाओं का बड़ा अमंगल करेगा इसी के कारण आगे चलकर कोरवों का सर्वनाश हो गया।

धूमकेतु का फल वराहमिहिर ने इस प्रकार बताया कि जितने माह तक यह दिखता है उतने ही वर्षो तक पृथ्वी पर अशुभ धटनाओं, मुख्य पुरूषों व असाध्य रोगों की झड़ी लग जाती हैं यथा -

''यावत्यहानि दृष्टियों मासास्तावन्व एवं फल पाकः।

मासैरत्दाच्श्रं वदैत प्रथामात्पक्ष त्तयात परः।। [103]

अर्थात् धूमकेतु का प्रभाव उतने वर्ष ही पृथ्वी पर होगा जितने महिने यह दृष्टिगोचर होगा। 19 वीं शताब्दी में 1985 नवम्बर से 1986 मई तक 6 माह तक यह दिखा अतः 1992 तक इसका अशुभ फल भूमि पर हुआ क्योंकि यह धूमकेतु भी रामायण व महाभारत काल की तरह उ.षाढा, पू.षाढा व मूल नक्षत्र को पार कर रहा था।[104] 1985 दिसम्बर से कई भयंकर प्राकृतिक विपत्तियाँ आई। ईरान, जापान, चीन, रूस आदि देशों में भयंकर भूकम्प आये। बाग्लादेश में कई बार आंधी, तुफानों का आक्रमण हुआ। इथोपिया का अकाल तो सर्वविदित है। भारत व श्रीलंका का युद्ध उस समय धूमकेतु काल नक्षत्र व धनु राशि को पार कर रहा था।

1910 में भी धूमकेतु दिखा[105] तो 1919 में पहला विश्वयुद्ध हुआ। 1991 बाबरी मस्जिद मतभेद भी उसी 6 वर्ष के समय में ही हुआ। महाभारत काल में केतु ग्रह चित्रा नक्षत्र पार कर गया और धूमकेतु पुष्य नक्षत्र पार कर रहा था तो धमासान युद्ध हुआ और कौरव हारे। 1985 के अंत से ही महाभारत के समान ही परिस्थिति थी अतः उत्तर भारत में पंजाब विद्रोह हुआ, काश्मीर में आतंकवाद पनपा, असम, गढ़वाली विद्रोह आदि हुआ।

वैदिक संहिताओं के अनुसार- जहाँ पूजनीय लोगों का अनादर हो, जहाँ अपूजनीय लोगों को आदर दिया जाता हो, तो ऐसे गणराज्य व महाराज्यों में क्रमशः आगजनी, सामूहिक अनिष्ट, युद्ध, गृहयुद्ध व भय की आशंका बनी रहती है, इसमें कोई संदेह नहीं है अतः, किसी भी अनिष्ट के लिए ग्रह गोचरीय व्यवस्था तो उत्तरदायी है ही परन्तु साथ ही मानव जाति के पवित्र संस्कार, निर्मल स्वच्छ हृदय और उनका एक दूसरे के साथ सहज व्यवहार अपेक्षित है[106]। यथा-

''अपूज्याः यत्र पूज्यन्ते, पूज्यानां च व्यति क्रमात्

त्रिणि तत्र प्रर्वतन्ते, दुर्भिक्षणं मणं ध्रुवम्''

यह उपरोक्त व्यवहार उस समय विशेष में ही संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति को वेदों व वेदांगों का ज्ञान हो और जिससे वह उस ज्ञान को अपने जीवन में आत्मसात कर सके।

www.drjitendraastro.com

References

1. भारतीय ज्योतिष का इतिहास/ डॉ.गौरख प्रसाद/ प्रका.1974/ उ.प्र.शासन, लखनऊ/ पृ.10
2. वैदिक सम्पति/ प्रका.1930/ प्रकाशक कच्छ केसल, बम्बई/ पृ.90
3. पाणिनी शिक्षा/ श्लोक 41-42
4. नारदीयम्/ शब्दकल्पद्रुम/ पृ.550
5. शब्देन्दुशेखर 3/1/71 एवं अथ सकल शब्द मूल भूत्वाद् धात्वर्थौ निरूप्यतेपरमल धुमंजूषा - धात्वर्थ विचार
6. संस्कृत हिन्दी कोष/ प्रका. 1987/ वासन शिवराम आप्टे/ मोतीलाल बनारसी दास/ पृ.4791
7. इणः षः 8/3/39, अष्टाध्यायी सुत्रपाठः गुरूप्रसाद शास्त्री/ प्रका.1951/ भार्गव पुस्तक/ बनारस, उ.प्र
8. मेदिनी कोष - 1929/पृ. 536
9. शब्दकल्पद्रुम खण्ड 2/ मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961/ पृ.550
10. हलायुध कोष/ हिन्दी समिति/ लखनऊ/ प्रका.1966/ पृ. 703
11. मनुस्मृति /अध्याय 12
12. वेदांग ज्योतिषम्/ शब्दकल्पद्रुम/ गर्वनमेन्ट ब्रान्च प्रेस, मेसूर/ प्रका.1936
13. ज्योतिष मार्तण्ड/ अज्ञात दर्शन कार्यालय,जोधपुर/ प्रका.2005
14. वेद व्रत मीमांसक ''ज्योतिष विवेक''/पृ. 4/1976/ गुरूकुल सिंहपुरा, रोहतक
15. तैत्तिरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
16. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा/ पृ. 4/ प्रकाशक गिरधारी लाल/ प्रका. 1974/ ज्योतिष मंदिर, पटेल नगर, दिल्ली
17. ज्योतिर्निबन्ध- श्री शिवराज/प्रका.1991/आनन्द आश्रम मुद्रालये/पूना/पृ. 1
18. ज्योतिर्निबन्ध/ श्लोक सं.2/ पृ. 2
19. जातक सार दीप-चन्द्रशेखरन् / पृ.5/ मद्रास गर्वन्मेंट आरियन्टल सीरीज, मद्रास
20. अथर्ववेद 19/9/7
21. यजुर्वेद संहिता 30/20, तैत्तिरीय ब्राह्मण 3/4
22. ऋग्वेद 1/164/48
23. ऋग्वेद 4/13/5
24. ऋग्वेद 1/125/1
25. पूर्वामनु प्रदिशं पार्थिवानामृतुन् प्रशासद्विदधावनुष्टु ऋग्वेद 1/95/3
26. अमी ये सप्तरश्मय, ऋग्वेद 1/105/9
27. सूर्यस्य सप्तरश्मिभि, ऋग्वेद 8 72/16
28. ऋग्वेद 1/164/11
29. ऋग्वेद 1/164/48
30. तैत्तिरीय संहिता 2/4/14
31. ऋग्वेद संहिता 10/85/19
32. अथर्ववेद 2/22/1
33. तैत्तिरीय ब्राह्मण 1/5/10
34. ऐतरेय ब्राह्मण 40/5
35. सूर्य रश्मि चन्द्रमा गन्धर्वः- तैत्तिरीय संहिता 3/4/716
36. ऋग्वेद संहिता 10/85/2
37. चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोः सूर्या अजायत - यजुर्वेद काण्डिका 31/12

www.drjitendraastro.com

38. बृहस्पते अतिअदर्यो अर्हाद्- ऋग्वेद 9/23/15
39. भारतीय ज्योतिष का इतिहास / डॉ. गोरख प्रसाद/ प्रका.1974/ उ.प्र.शासन, लखनऊ/ पृ 31/32
40. ऋग्वेद 4/50/4, अथर्ववेद 20/88/4, तैŸारीय ब्राह्मण 2/8/2
41. ऋग्वेद 3/32/2
42. वैदिक कोश/ सूर्य कान्त / प्रकाशक- बी एच यू/प्रकाश्न 1963/पृ.519
43. ऐतरेय ब्राह्मण 7/12
44. शतपथ ब्राह्मण 3/9/3/25
45. ऋग्वेद 10/12/3, स्वाध्याय मण्डल पारडी, गुजरात
46. अथर्ववेद 19/9/10
47. ऋग्वेद 5/40/9
48. महाभारत - तृतीय खण्ड/भीष्म पर्व/ अ. 12/ श्लोक 41/ गीता प्रेस/ पृ.2572
49. बृहत्संहिता / राहुचाराध्याय/ अ.5/ श्लोक 2/ पृ. 35
50. बृहज्जातक /अ. 2 / श्लोक 3/ पृ.23
51. ब्रह्मनित्यकर्म समुच्चय/ प्रातः स्मरणम्/ श्लोक 1/ पृ.2034/ बालूकेश्वर संस्कृत पाठशाला, बम्बई
52. ऋग्वेद 10/8/1
53. वैदिक कोष / पृ.108
54. तैत्तिरीय आरण्यक 1/23/2, 1/24/4, 1/3/1/6
55. ज्योतिषतत्व 1/14
56. अथर्ववेद 19/9/10
57. हिन्दुधर्म कोष/ डॉ.राजबली पाण्डेय/ उ.प्र./ हिन्दी संस्थान लखनऊ / पृ.343
58. अथर्ववेद 19/9/9
59. अथर्ववेद 6/128/9
60. ऋग्वेद 7/7/2
61. ऐतरेय ब्राह्मण 8/20
62. यो अक्षेणेव चक्रिया शचीति विष्वद्दृतस्तम्भ पृथिवीयुतधाम् - ऋग्वेद 10/89/4
63. ऐतरेय ब्राह्मण 11/6
64. ऋग्वेद 1/64/8
65. भारतीय ज्योतिष/ शंकर बालकृष्ण दीक्षित/ पृ.38-1976/ उ.प्र/ लखनऊ
66. ऋग्वेद 5/40/9
67. अथर्ववेद 19/9/10, 13/2/4, 12/36, शतपथ ब्राह्मण 4/3/4/21
68. ऋग्वेद 4/28/23, 5/23/4, 10/38/4
69. अथर्ववेद 100/3
70. अथर्ववेद 19/9/7
71. अथर्ववेद 19/9/10
72. निर्णय सागर पंचांग/ नीमच, म.प्र./ संवत् 2066
73. वर्ष प्रबोध/ राशि ग्रहण विचार / श्लोक 133/ पृ.स. 100/ खेमराज प्रकाशन/ प्रकाशन 1999
74. बृहत्संहिता /अ.32/ भूकम्प लक्षणाध्याय/ श्लोक 3 से 7/ भारतीय विद्या प्रकाशन/ प्रका. 2006
75. बृहत्संहिता /अ.32/ भूकम्प लक्षणाध्याय/ श्लोक 8 से 22
76. बृहत्संहिता /अ.32/ भूकम्प लक्षणाध्याय/ श्लोक 2
77. बृहत्संहिता /अ.32/ भूकम्प लक्षणाध्याय/ श्लोक 7/ पृ.152

www.drjitendraastro.com

78. बृहत्संहिता /अ.32/ भूकम्प लक्षणाध्याय/ श्लोक 8 से 21
79. बृहत्संहिता /अ.32/ भूकम्प लक्षणाध्याय/ श्लोक 31
80. बृहत्संहिता /अ.32/ भूकम्प लक्षणाध्याय/ श्लोक 13
81. बृहद्पाराशरहौराशास्त्र/ अ. 3 / श्लोक स. 9/ प्रकाशन 2005/ प्रसाद पुस्तक भण्डार, वाराणसी
82. बृहत्संहिता /अ.32/ भूकम्प लक्षणाध्याय/ श्लोक 9व10
83. बृहद्पाराशरहौराशास्त्र/ अ. 3 / श्लोक 9/ प्रकाशन 2005
84. भूकम्प के ज्योतिषिय विश्लेषण का सारगर्भित अध्ययन/ डॉ. भोजराज द्विवेदी/ प्रकाशन 2001/ डायमण्ड पॉकेट बुक
85. भूकम्प के ज्योतिषिय विश्लेषण का सारगर्भित अध्ययन / डॉ. भोजराज द्विवेदी/ प्रकाशन 2001
86. बृहत्संहिता /अ.32/ भूकम्प लक्षणाध्याय/ श्लोक 15
87. भूकम्प के ज्योतिषिय विश्लेषण का सारगर्भित अध्ययन / डॉ. भोजराज द्विवेदी/ प्रकाशन 2001
88. बृहत्संहिता / अ.32/ भूकम्प लक्षणाध्याय/ श्लोक 31
89. अद्भुत दर्पण/ गर्ग ऋषि
90. निर्णय सागर पचांग/ नीमच, म.प्र./ संवत् 2066-67
91. ईस्यूज ईन वेदा एण्ड ऐस्ट्रोलोजी/ महर्षि संदीपन/ राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन/ नाग पब्लिकेशन, दिल्ली / पृ.28
92. बृहत्संहिता/ अ.11/ केतुचाराध्याय/ श्लोक 5
93. सेक्सपियर/ जूलियस सिजर
94. ईस्यूज ईन वेदा एण्ड ऐस्ट्रोलोजी/ महर्षि संदीपन/ राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन/नाग पब्लिकेशन, दिल्ली /पृ. 28
95. वाल्मिकि रामायण/ युद्धकाण्ड/ अ. 4/ श्लोक 51/ पृ.1060/ गीता प्रेस गौरखपुर/ 1960
96. वाल्मिकि रामायण /युद्धकाण्ड/ अ. 4/श्लोक 52/ पृ.1060/ गीता प्रेस गौरखपुर/ प्रकाशन 1960
97. बृहत्संहिता / अ.11/ केतुचाराध्याय/ श्लोक 31
98. बृहत्संहिता / अ.11/ केतुचाराध्याय/ श्लोक 31
99. ईस्यूज ईन वेदा एण्ड ऐस्ट्रोलोजी / महर्षि संदीपन/ राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन/नाग पब्लिकेशन, दिल्ली / पृ. 30
100. ईस्यूज ईन वेदा एण्ड ऐस्ट्रोलोजी / महर्षि संदीपन/ राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन/ नाग पब्लिकेशन, दिल्ली / पृ. 30
101. महाभारत / भीष्मपर्व/ अ.3/ श्लोक 12
102. महाभारत / भीष्मपर्व/ अ.3/ श्लोक 13
103. बृहत्संहिता / अ.11/ श्लोक 7
104. ईस्यूज ईन वेदा एण्ड ऐस्ट्रोलोजी / महर्षि संदीपन/ राष्ट्रीय राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन/ नाग पब्लिकेशन, दिल्ली / पृ. 31
105. ईस्यूज ईन वेदा एण्ड ऐस्ट्रोलोजी / महर्षि संदीपन/ राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन/ नाग पब्लिकेशन, दिल्ली /पृ. 32
106. अनिष्ट ग्रह कारण व निवारण / अंक1/ अज्ञात दर्शन कार्यालय/ प्रका. 2006/ जोधपुर

www.drjitendraastro.com